# अन्त्येष्टि संस्कार

महर्षि दयानन्द सरस्वती

कृत संस्कार विधि

से

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

# Antyeshti Sanskaara

**Prayers and Procedures for Last rites and Creamtion** 

From Sanskaara Vidhi by Maharshi Dayaananda Sarasvatee

**Translated by: Sañjay Mohan Mittal** 

# तैयारी:

मृतक के शरीर को स्नान करा नए वस्त्र धारण कराकर शमशान ले जाए। यदि पारम्परिक लकडियों की चिता उपलब्ध हो तो मृतक को चिता पर लिटा कर चिता में अग्नि प्रवेश कराकर पूरा संस्कार करें। आधुनिक शवदाह गृह में शरीर के उत्तर में एक दीपक जलाकर रखें और मन्त्रोचार के साथ पार्थिव शरीर को घी और सामग्री से ढक दें और संस्कार के उपरान्त उसका दाह करें।

#### **Preparation:**

Bathe the corpse and dress in a new attire. The corpse than should be ceremoniously transported to the cremation ground. In traditional cremation grounds, place the corpse on a properly arranged wooden pyre, then ignite it and perform the sansakaara. In modern crematoriums, ignite a diyaa and place it in the Northern direction and then cover the corpse with ghee and saamagree while chanting the mantras. The corpse is put into the cremation chamber after the sanskaara is complete.

```
ओमग्नये स्वाहा ॥१॥
om agnaye svaahaa ॥1॥
```

ओं सोमाय स्वाहा ॥२॥

om somaaya svaahaa ||2||

ओं लोकाय स्वाहा ॥३॥

om lokaaya svaahaa ||3||

ओमनुमतये स्वाहा ॥४॥

omanumataye svaahaa ||4||

ओं स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥५॥

om svargaaya lokaaya svaahaa ||5||

ओं सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वार्तमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा। अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरै: स्वाहां ॥१॥

om sooryañ chakṣhur-gachchhatu vaatamaatmaa dyaañ cha gachchha pṛithiveeñ cha dharmaṇaa | apo vaa gachchha yadi tatra te hitamoṣhadheeṣhu prati tiṣhṭhaa shareeraiḥ svaahaa ||1||

ओम् <u>अ</u>जो भागस्तर्प<u>सा</u> तं तंपस<u>्व</u> तं ते शोचिस्तंपतु तं ते <u>अ</u>र्चिः । यास्ते शिवास्तन्वो जातवे<u>द</u>स्ताभिर्वहैनं सुकृतांमु लोकं स्वाहां ॥२॥ om ajo bhaagastapasaa tan tapasva tan te shochistapatu tan te archiḥ | yaaste

shivaastanvo jaatavedastaabhirvahainan sukritaamu lokan svaahaa ||2|| ओम् अंवसृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुंतश्चरति स्वधाभिः । आयुर्वसांन उपवेतु शेषः सं गंच्छतां तन्वां जातवेदः स्वाहां ॥३॥

om avasrija punaragne pitribhyo yasta aahutashcharati svadhaabhih | aayurvasaana upavetu sheshah san gachchhataan tanvaa jaatavedah svaahaa | | 3 | |

ओम् <u>अ</u>ग्नेर्<u>वर्म</u> प<u>रि</u> गोभिर्व्ययस्<u>व</u> संप्रोर्णुष्<u>व</u> पीर्वसा मेदसा च । नेत्त्वा धृष्णुर्हरसा जहींषाणो <u>द</u>धृग्वि<u>ध</u>क्ष्यन् प<u>र्य</u>ङ्खयां<u>ते</u> स्वाहा ॥४॥

om agnervarma pari gobhirvyayasva sam prorņushva peevasaa medasaa cha | nettvaa dhrishnurharasaa jarhrishaano dadhrigvidhakshyan paryankhayaate svaahaa | |4||

ओं यं त्वर्मग्ने समद<u>ंह</u>स्तमु निर्वापया पुनः । कियाम्ब्वत्रं रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा स्वाहां ॥५॥

om yan tvamagne samadahastamu nirvaapayaa punaḥ | kiyaambvatra rohatu paakadoorvaa vyalkashaa svaahaa ||5||

ओं <u>परेयि</u>वांसं <u>प्रवतो महीरनुं बहुभ्यः</u> पन्थामनुपस्पशानम् । <u>वैवस्व</u>तं <u>सङ्गर्मनं</u> जनानां <u>य</u>मं राजानं <u>ह</u>विषां दुवस्य स्वाहां ॥६॥

om pareyivaan sam pravato maheeranu bahubhyaḥ

panthaamanupaspashaanam | vaivasvatan saṅgamanañ janaanaañ yamaṇ raajaanaṅ haviṣhaa duvasya svaahaa | |6||

ओं <u>य</u>मो नो गातुं प्र<u>थ</u>मो विवे<u>द</u> नैषा गर्व्य<u>ति</u>रपंभर्तवा उ । यत्रा न<u>ः</u> पूर्वे<u>पि</u>तरः

प<u>रेयुरे</u>ना जं<u>ज्ञ</u>ानाः <u>प</u>थ्या३ः अनु स्वाः स्वाहां ॥७॥

om yamo no gaatum prathamo viveda naiṣhaa gavyootirapabhartavaa u | yatraa naḥ poorvepitaraḥ pareyurenaa jajñaanaaḥ pathyaa3 anu svaaḥ svaahaa | | 7 | |

ओम् मातंली क्वव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्<u>बृह</u>स्पतिरुक्वंभिर्वावृधानः । याँश्चं <u>दे</u>वा वांवृधुर्ये च <u>दे</u>वान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मंदन्ति स्वाहां ॥८॥

om maatalee kavyairyamo aṅgirobhirbṛihaspatirṛikvabhirvaavṛidhaanaḥ | yaaṃ shcha devaa vaavṛidhurye cha devaantsvaahaanye svadhayaanye madanti svaahaa | |8||

ओम् <u>इ</u>मं यंम प्रस्<u>त</u>रमा हि सीदाङ्गिरोभिः <u>पितृ</u>भिः संविदानः ॥ आ त्वा मन्त्राः कविश्वस्ता वहन्त्वेना राजन्ह्विषां मादयस्व स्वाहां ॥९॥

om imañ yama prastaramaa hi seedaaṅgirobhiḥ pitṛibhiḥ sam vidaanaḥ || aa tvaa mantraaḥ kavishastaa vahantvenaa raajanhaviṣhaa maadayasva svaahaa ||9||

ओम् अङ्गिरो<u>भि</u>रा गंहि <u>य</u>ज्ञिये<u>भिर्यमं वैरूपैरि</u>ह मादयस्व । विवस्वन्तं हु<u>वे</u> यः <u>पिता ते</u>ऽस्मिन्<u>य</u>ज्ञे <u>ब</u>र्हिष्या <u>निषद्य</u> स्वाहां ॥१०॥

om aṅgirobhiraa gahi yajñiyebhiryama vairoopairiha maadayasva | vivasvantaṅ huve yaḥ pitaa te'sminyajñe barhiṣhyaa niṣhadya svaahaa ||10|| ओं प्रेहि प्रेशिमः पूर्व्यभिर्यत्रां नः पूर्वे पितरः परेयुः । उभा राजांना स्वधया मदंन्ता यमं पंश्यासि वर्रणं च देवं स्वाहां ॥११॥

om prehi prehi pathibhiḥ poorvyebhiryatraa naḥ poorve pitaraḥ pareyuḥ | ubhaa raajaanaa svadhayaa madantaa yamam pashyaasi varuṇañ cha devan svaahaa ||11||

ओं सं गंच्छस्व <u>पितृभिः</u> सं <u>य</u>मेनेष्टापूर्तेनं प<u>र</u>मे व्योमन् । <u>हि</u>त्वायां<u>व</u>द्यं पु<u>न</u>रस्<u>त</u>मेहि सं गंच्छस्व <u>त</u>न्वां सुवर्चाः स्वाहां ॥१२॥

om san gachchhasva pitribhih san yameneshtaapoortena parame vyoman | hitvaayaavadyam punarastamehi san gachchhasva tanvaa suvarchaah svaahaa | | 12 | |

ओम् अपे<u>त</u> वी<u>त</u> वि च स<u>र्</u>पतातोऽस्मा <u>ए</u>तं <u>पि</u>तरो लोकमक्रन्। अहोभिरुद्धिरुक्तृभिर्व्यक्तं यमो दंदात्यवसानमस्मै स्वाहां॥१३॥

om apeta veeta vi cha sarpataato'smaa etam pitaro lokamakran | ahobhiradbhiraktubhirvyaktañ yamo dadaatyavasaanamasmai svaahaa | |13||

```
ओं <u>यमाय</u> सोमं सून्त <u>य</u>माय ज़्हता हिवः । यमं ह यज्ञो गंच्छत्यग्निदूतो
अरंकृत<u>ः</u> स्वाहां ॥१४॥
om yamaaya soman sunuta yamaaya juhutaa havih | yaman ha yajño
gachchhatyagnidooto aran kritan svaahaa | | 14 | |
ओं <u>य</u>माय घृतव<u>द्धि</u>विर्जुहो<u>त</u> प्र च तिष्ठत। सं नो <u>दे</u>वेष्वा यमद् <u>दी</u>र्घमायुः प्र
<u>जीवसे</u> स्वाहां ॥१५॥
om yamaaya ghritavaddhavirjuhota pra cha tishthata | san no deveshvaa
yamad deerghamaayuh pra jeevase svaahaa | |15||
ओं <u>यमाय मध्</u>मत्<u>तमं राज्ञे ह</u>व्यं जुहोतन । <u>इ</u>दं न<u>म</u> ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः
पश्<u>रि</u>कृद्भ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥१६॥
om yamaaya madhumattaman raajñe havyañ juhotana | idan nama rishibhyah
poorvajebhyah poorvebhyah pathikridbhyah svaahaa | | 16 | |
ओं कृष्णः श्वेतोऽ<u>र</u>ुषो यामो अस्य <u>ब्र</u>ध्न ऋज उत शोणो यशस्वान् । हिर्रण्यरू<u>पं</u>
जिनंता जजान स्वाहां ॥१७॥
om krishnah shveto'rusho yaamo asya bradhna rijra uta shono yashasvaan |
hiranyaroopañ janitaa jajaana svaahaa | | 17 | |
ओं प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः स्वाहां ॥१॥
om praanebhyah saadhipatikebhyah svaahaa | |1||
ओं पृ<u>थि</u>व्यै स्वाहां ॥२॥
om prithivyai svaahaa | |2||
ओम् <u>अ</u>ग्न<u>ये</u> स्वाहां ॥३॥
om agnaye svaahaa | | 3 | |
ओम् <u>अ</u>न्तरिक्षा<u>य</u> स्वाहां ॥४॥
om antarikshaaya svaahaa | |4||
ओं वायवे स्वाहां ॥५॥
om vaayave svaahaa | | 5 | |
ओं दिवे स्वाहां ॥६॥
om dive svaahaa | |6||
```

ओं सूर्य<u>ीय</u> स्वाहां ॥७॥ om sooryaaya svaahaa | | 7 | | ओं दिग्भ्यः स्वाहां ॥८॥ om digbhyah svaahaa | |8|| ओं चन्द्राय स्वाहा ॥९॥ om chandraaya svaahaa | |9|| ओं नक्षंत्रेभ्यः स्वाहां ॥१०॥ om nakshatrebhyah svaahaa | |10|| ओम् <u>अ</u>द्भ्यः स्वाहा ॥११॥ om adbhyah svaahaa | | 11 | | ओं वर्रुणा<u>य</u> स्वाहा ॥१२॥ om varuņaaya svaahaa | | 12 | | ओं नाभ्यै स्वाहां ॥१३॥ om naabhyai svaahaa | | 13 | | ओं पूता<u>य</u> स्वाहां ॥१४॥ om pootaaya svaahaa ||14|| ओं वाचे स्वाहां ॥१५॥ om vaache svaahaa | |15|| ओं प्राणाय स्वाहां ॥१६॥ om praaņaaya svaahaa ||16|| ओं प्राणाय स्वाहां ॥१७॥ om praaņaaya svaahaa ||17|| ओं चक्ष<u>ष</u>ि स्वाहा ॥१८॥ om chakşhuşhe svaahaa | | 18 | | ओं चक्ष<u>ुंषे</u> स्वाहां ॥१९॥ om chakşhuşhe svaahaa | |19|| ओं श्रोत्रांय स्वाहां ॥२०॥ om shrotraaya svaahaa | |20| |

ओं श्रोत्राय स्वाहां ॥२१॥ om shrotraaya svaahaa ||21|| ओं लोमंभ्यः स्वाहां ॥२२॥ om lomabhyah svaahaa | |22|| ओं लोम्भ्यः स्वाहा ॥२३॥ om lomabhyah svaahaa | |23|| ओं त्वचे स्वाहां ॥२४॥ om tvache svaahaa | |24|| ओं त्वचे स्वाहा ॥२५॥ om tvache svaahaa | |25|| ओं लोहिताय स्वाहां ॥२६॥ om lohitaaya svaahaa | | 26 | | ओं लोहिताय स्वाहां ॥२७॥ om lohitaaya svaahaa | | 27 | | ओं मेदोभ्यः स्वाहा ॥२८॥ om medobhyah svaahaa | |28|| ओं मेदो<sup>५</sup>य<u>ः</u> स्वाहा ॥२९॥ om medobhyah svaahaa | 29 | | ओं मा**%**ंसेभ्यः स्वाहां ॥३०॥ om maamsebhyah svaahaa | |30|| ओं मा**%**ंसेभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥३१॥ om maamsebhyah svaahaa | |31|| ओं स्नावंभ्यः स्वाहां ॥३२॥ om snaavabhyah svaahaa | |32|| ओं स्नावंभ्यः स्वाहां ॥३३॥ om snaavabhyaḥ svaahaa ||33|| ओम् <u>अ</u>स्थभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥३४॥

```
om asthabhyah svaahaa | |34| |
ओम् <u>अ</u>स्थभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥३५॥
om asthabhyah svaahaa | |35||
ओं मज्जभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥३६॥
om majjabhyah svaahaa | |36||
ओं मज्जभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥३७॥
om majjabhyah svaahaa | |37||
ओं रेतसे स्वाहां ॥३८॥
om retase svaahaa | | 38 | |
ओं पायवे स्वाहां ॥३९॥
om paayave svaahaa | |39||
ओम् <u>आया</u>साय स्वाहां ॥४०॥
om aayaasaaya svaahaa | |40||
ओं प्रायासाय स्वाहां ॥४१॥
om praayaasaaya svaahaa | |41| |
ओं <u>संया</u>सा<u>य</u> स्वाहा ॥४२॥
om sañyaasaaya svaahaa | |42||
ओं वियासाय स्वाहां ॥४३॥
om viyaasaaya svaahaa | |43 | |
ओम् <u>उद्या</u>साय स्वाहां ॥४४॥
om udyaasaaya svaahaa | |44| |
ओं शुचे स्वाहां ॥४५॥
om shuche svaahaa | |45||
ओं शोचते स्वाहां ॥४६॥
om shochate svaahaa | |46||
ओं शोर्चमानाय स्वाहा ॥४७॥
om shochamaanaaya svaahaa | |47||
ओं शोकांय स्वाहां ॥४८॥
```

```
om shokaaya svaahaa | |48||
ओं तपंसे स्वाहां ॥४९॥
om tapase svaahaa | |49||
ओं तप्यते स्वाहां ॥५०॥
om tapyate svaahaa | |50||
ओं तप्यमानाय स्वाहां ॥५१॥
om tapyamaanaaya svaahaa | |51| |
ओं तप्ताय स्वाहां ॥५२॥
om taptaaya svaahaa | |52||
ओं घर्माय स्वाहां ॥५३॥
om gharmaaya svaahaa | |53||
ओं निष्कृंत<u>्यै</u> स्वाहां ॥५४॥
om nishkrityai svaahaa | |54| |
ओं प्रायंश्चित्यै स्वाहां ॥५५॥
om praayashchityai svaahaa | |55||
ओं भेषजाय स्वाहां ॥५६॥
om bheshajaaya svaahaa ||56||
ओं यमाय स्वाहा ॥५७॥
om yamaaya svaahaa ||57||
ओम् <u>अ</u>न्तंका<u>य</u> स्वाहां ॥५८॥
om antakaaya svaahaa ||58||
ओं मृत्य<u>वे</u> स्वाहा ॥५९॥
om mrityave svaahaa | |59||
ओं ब्रह्मणे स्वाहा ॥६०॥
om brahmaņe svaahaa | |60||
ओं <u>ब्र</u>ह्महत्या<u>य</u>ै स्वाहां ॥६१॥
om brahmahatyaayai svaahaa | |61| |
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्य<u>ः</u> स्वाहां ॥६२॥
```

om vishvebhyo devebhyaḥ svaahaa ||62|| ओं द्यावा पृथिवीभ्या%ं स्वाहा ॥६३॥

om dyaavaa pṛithiveebhyaaṃ svaahaa ||63|| ओं सूर्यं चक्षुंषा गच्छ वार्तमात्मना दिवं च गच्छं पृथिवीं च धर्मभिः । अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषंधीषु प्रति तिष्ठा शरीं<u>रैः</u> स्वाहां ॥१॥

om sooryañ chakṣhuṣhaa gachchha vaatamaatmanaa divañ cha gachchha pṛithiveeñ cha dharmabhiḥ | apo vaa gachchha yadi tatra te hitam-oṣhadheeṣhu prati tiṣhṭhaa shareeraiḥ svaahaa ||1||

. ओं सो<u>म</u> एकेभ्यः पवते घृतमे<u>क</u> उपासते । येभ्यो मधु प्रधाव<u>ित</u> तांश्चि<u>दे</u>वापि गच्छतात् स्वाहां ॥२॥

om soma ekebhyaḥ pavate ghṛitameka upaasate | yebhyo madhu pradhaavati taañshchidevaapi gachchhataat svaahaa | |2||

ओं ये चित्पूर्वं ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः । ऋषींस्तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात् स्वाहां ॥३॥

om yechitpoorva ritasaataa ritajaataa ritaavridhah risheenstapasvato yama tapojaam api gachchhataat svaahaa | |3||

ओं तपं<u>सा</u> ये अनाधृष्यास्तपं<u>सा</u> ये स्व <u>र्ययुः । तपो</u> ये चक्रिरे म<u>ह</u>स्तांश<u>्चिंदे</u>वापिं गच्छतात् स्वाहां ॥४॥

om tapasaa ye anaadhṛiṣhyaastapasaa ye svaryayuḥ | tapo ye chakrire mahastaañshchidevaapi gachchhataat svaahaa ||4|| ओं ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः । ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात् स्वाहां ॥५॥

om ye yudhyante pradhaneshu shooraaso ye tanootyajah ye vaa sahasradakshinaastaanshchidevaapi gachchhataat svaahaa ||5|| ओं स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी । यच्छास्मै शर्म सप्रथाः स्वाहां ॥६॥ om syonaasmai bhava prithivyanriksh araa niveshanee | yachchhaasmai sharma saprathaah svaahaa ||6||

```
ओम् अ<u>पे</u>मं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वह<u>त</u> प<u>रि</u> ग्रामां<u>दि</u>तः।
मृत्युर्यमस्यांसीद्तः प्रचेता असून् पितृभ्यो गम्यां चंकार स्वाहां ॥७॥
om apemañ jeevaa arudhan grihebhyastan nirvahata pari graamaaditah |
mṛityuryamasyaaseeddootaḥ prachetaa asoon pitribhyo gamayaañ chakaara
svaahaa | | 7 | |
ओं यम: परोऽवरी विवस्वांस्ततः परं नाति पश्यामि किं चन। यमे अध्वरो अधि
मे निर्विष्टो भुवो विवस्वानन्वातंतान स्वाहां ॥८॥
om yamaḥ paro'varo vivasvaanstataḥ paran naati pashyaami kiñchana | yame
adhvaro adhi me nivishto bhuvo vivasvaananvaatataana svaahaa | |8||
ओम् अपांगूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सर्वर्णामदधुर्विवस्वते।
<u>उ</u>ताश्विनांवभ<u>र</u>द्यत्तदास<u>ी</u>दजहादु द्वा मिंथुना सं<u>र</u>ण्यूः स्वाहां ॥९॥
om apaagoohannamritaam martyebhyah kritvaa savarnaamadadhurvivasvate
utaashvinaavabharadyattadaaseedajahaadu dvaa mithunaa saranyooh svaahaa
ओम् इमौ युनज्मि ते बह्वी असुनीताय वोढवे। ताभ्यां यमस्य सादनं
सिमंतीश्चावं गच्छतात् स्वाहां ॥१०॥
om imau yunajmi te bahvee asuneetaaya vodhave | taabhyaam yamasya
saadanan samiteeshchaava gachchhataat svaahaa | | 10 | |
ओम् अग्नये रियमते स्वाहा ॥१॥
om agnaye rayimate svaahaa | | 1 | |
ओं पुरुषस्य सयावर्यपेदधानि मृज्महे। यथा नो अत्र नापरः पुरा जरस आयति
स्वाहा ॥२॥
om purushasya sayaavaryapedadhaani mrijmahe | yathaa no atra naaparah
puraa jarasa aayati svaahaa | |2||
ओं य एतस्य पथो गोप्तारस्तेभ्यः स्वाहा ॥३॥
om ya etasya patho goptaarastebhyah svaahaa | |3||
ओं य एतस्य पथो रक्षितारस्तेभ्यः स्वाहा ॥४॥
om ya etasya patho rakshitaarastebhyah svaahaa | |4||
```

```
ओं य एतस्य पथोऽभिरक्षितारस्तेभ्यः स्वाहा ॥५॥
om ya etasya patho'bhirakshitaarastebhyah svaahaa | | 5 | |
ओं ख्यात्रे स्वाहा ॥६॥
om khyaatre svaahaa | | 6 | |
ओम् अपाख्यात्रे स्वाहा ॥७॥
om apaakhyaatre svaahaa | | 7 | |
ओम् अभिलालपते स्वाहा ॥८॥
om abhilaalapate svaahaa | | 8 | |
ओम् अपलालपते स्वाहा ॥९॥
om apalaalapate svaahaa | | 9 | |
ओम् अग्नये कर्मकृते स्वाहा ॥१०॥
om agnaye karmakrite svaahaa | |10||
ओं यमत्र नाधीमस्तस्मै स्वाहा ॥११॥
om yamatra naadheemastasmai svaahaa | |11||
ओम् अग्नये वैश्वानराय सुवर्गाय लोकाय स्वाहा ॥१२॥
om agnaye vaishvaanaraaya suvargaaya lokaaya svaahaa | | 12 | |
ओम् आयात् देवः सुमनाभिरूतिभिर्यमो ह वेह प्रयताभिरक्ता।
आसीदता ५ सुप्रयते ह बर्हिष्यूर्जाय जात्यै मम शत्रुहत्यै स्वाहा ॥१३॥
om aayaatu devah sumanaabhirootibhiryamo ha veha prayataabhiraktaa |
aaseedataamsuprayate ha barhishyoorjaaya jaatyai mama shatruhatyai svaahaa
||13||
ओं योऽस्य कौष्ठ्य जगतः पार्थिवस्यैक इद्वशी। यमं भङ्ग्यश्रवो गाय यो
राजाऽनपरोध्यः स्वाहा ॥१४॥
om yo'sya kaushthya jagatah paarthivasyaika idvashee | yamam bhangyashravo
gaaya yo raajaa'naparodhyah svaahaa | | 14 | |
ओं यमं गाय भङ्ग्यश्रवो यो राजाऽनपरोध्यः। येनाऽऽपो नद्यो धन्वानि येन द्यौः
पृथिवी दृढा स्वाहा ॥१५॥
```

om yaman gaaya bhangyashravo yo raajaa'naparodhyan | yenaa''po nadyo dhanvaani yena dyaun prithivee dridhaa svaahaa ||15|| ओं हिरण्यकक्ष्यान्त्सुधुरान् हिरण्याक्षानयःशफान् । अश्वाननः शतो दानं यमो राजाभितिष्ठति स्वाहा ॥१६॥

om hiraṇyakakṣhyaantsudhuraan hiraṇyaakṣhaanayaḥshaphaan | ashvaananaḥ shato daanañ yamo raajaabhitiṣhṭhati svaahaa ||16|| ओं यमो दाधार पृथिवीं यमो विश्वमिदं जगत्। यमाय सर्वमित्तस्थे यत् प्राणद्वायुरक्षितं स्वाहा ॥१७॥

om yamo daadhaara pṛithiveeñ yamo vishvamidañ jagat | yamaaya sarvamittasthe yat praaṇadvaayurakṣhitan svaahaa ||17|| ओं यथा पञ्च यथा षड् यथा पञ्चदशर्षयः । यमं यो विद्यात् स ब्रुयाद्यथैक ऋषिर्विजानते स्वाहा ॥१८॥

om yathaa pañcha yathaa ṣhaḍ yathaa pañchadasharṣhayaḥ | yamañ yo vidyaat sa bruyaadyathaika riṣhirvijaanate svaahaa | |18||

ओं त्रिकद्रुकेभिः पतित षडुर्वीरेकिमद् बृहत्। गायत्री त्रिष्टुप् छन्दा शसि सर्वा ता यम आहिता स्वाहा ॥१९॥

om trikadrukebhiḥ patati ṣhaḍurveerekamid bṛihat | gaayatree triṣhṭup chhandaansi sarvaa taa yama aahitaa svaahaa ||19|| ओम् अहरहर्नयमानो गामश्चं पुरुषं जगत् । वैवस्वते न तृप्यति

पञ्चभिर्मानवैर्यमः स्वाहा ॥२०॥

om aharaharnayamaano gaamashvam puruṣhañ jagat | vaivasvate na tṛipyati pañchabhirmaanavairyamaḥ svaahaa ||20|| ओं वैवस्वते विविच्यन्ते यमे राजिन ते जनाः । ये चेह सत्येनेच्छन्ते य उ

चानृतवादिनः स्वाहा ॥२१॥

om vaivasvate vivichyante yame raajani te janaaḥ | ye cheha satyenechchhante ya u chaanṛitavaadinaḥ svaahaa | |21| |

# ओं ते राजन्निह विविच्यन्तेऽथा यन्ति त्वामुप । देवांश्च ये नमस्यन्ति ब्राह्मणांश्चापचित्यति स्वाहा ॥२२॥

om te raajanniha vivichyante'thaa yanti tvaamupa | devaañshcha ye namasyanti braahmaṇaañ shc h aapac h ityati svaahaa ||22|| ओं यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः । अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणा अनुवेनति स्वाहा ॥२३॥

om yasmin vṛikṣhe supalaashe devaiḥ sam pibate yamaḥ | atraa no vishpatiḥ pitaa puraaṇaa anuvenati svaahaa ||23||

ओम् उत्ते तभ्नोमि पृथिवीं त्वत्परीमं लोक निदधन्मो अह १रिषम् । एता %ं

स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादनात् ते मिनोतु स्वाहा ॥२४॥

om utte tabhnomi pṛithiveen tvatpareeman loka nidadhanmo ahaṃriṣham|etaaṃ sthooṇaam pitaro dhaarayantu te'traa yamaḥ saadanaat te minotu svaahaa ||24||

ओं यथाऽहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्त्तव ऋतुभिर्यन्ति क्लृप्ताः। यथा नः पूर्वमपरो

जहात्येवा धातरायू%ंषि कल्पयैषा%ं स्वाहा ॥२५॥

om yathaa'haanyanupoorvam bhavanti yatharttava ritubhiryanti klriptaaḥ | yathaa naḥ poorvamaparo jahaatyevaa dhaataraayooṃṣhi kalpayaiṣhaaṃ svaahaa | |25||

ओं न हि ते अग्ने तनुवै क्रूरं चकार मर्त्यः । कपिर्बभस्ति तेजनं पुनर्जरायुर्गौरिव । अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुध्या रियम् । अप नः शोशुचदघं मृत्यवे स्वाहा ॥२६॥

om na hi te agne tanuvai kroorañ chakaara martyaḥ | kapirbabhasti tejanam punarjaraayurgauriva | apa naḥ shoshuchadaghamagne shushudhyaa rayim | apa naḥ shoshuchadagham mṛityave svaahaa | |26||